Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 12/02/2020 Accepted on : 26/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त कृषि

डॉ. जयलक्ष्मी एफ़.पाटील
सहायक प्राध्यापक, पी. जी. विभाग
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास – ६०० ०१७
ई-मेल: pjayalaxmi98@gmail.com

१ प्रस्तावना :

कविता मानव की आत्मिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, वह जन-मन की वाणी है, मनोरंजन और उपभोग से लेकर विद्रोह और बदलाव के लिए उपयोग में आनेवाली वस्तु भी है । जीवंत कविता हमेशा मानवीय और संभावनापूर्ण होती है । मनुष्यता का संरक्षण-संवर्द्धन करना कविता का मुख्य सरोकार है । धूमिल ने कहा है – 'एक सही कविता पहले एक सार्थक वक्तव्य होती है अथवा कविता शब्दों की अदालत में मुजरिम के कटघरे में खडे बेकसूर आदमी का हलकनामा है ।" हिंदी में समकालीन कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता की तुलना में पूर्ण रूप से मानव जीवन के प्रति समर्पित कविता है । समकालीन कविता वर्तमान जीवन की विसंगतियों एवं विकृतियों पर तीखा प्रहार करते हुए वास्तविकताओं की कई पर्ते खोलकर दिखाती है इसलिए डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय समकालीन कविता को 'वर्तमान से अंकित कविता मानते हैं ।" रघुवीर सहाय ने 'समकालीनता को बहुत ही व्यापक अर्थ में परिभाषित किया है । उन्होंने कहा है – 'मेरी दृष्टि में समकालीनता मानव-भविष्य के प्रति पक्षधरता का दूसरा नाम है .. मनुष्य की प्रतिभा और सामर्थ्य की अन्त संभावनाओं का द्वार अपने अनुभव के लिए खुला रखकर सप्रयत्न उसके वर्तमान को बदलने में जो संलग्न होता है वही समकालीनता का धर्म-निर्वाह करता है ।"

२ कृषि :

हल आदि की सहायता से जमीन को जोतकर उसमें अनाज पैदा करने को कृषि कार्य कहा जाता है । मनुष्य ने जब हल ईजाद किया और उसमें जानवरों की सहायता से जोतकर खेत बनाना शुरू किया तब वास्तविक कृषि का आरंभ हुआ । 'नियमित कृषि से मनुष्यों को ऋतुओं का ज्ञान हुआ क्योंकि फसल की बुआई और कटाई ऋतु पर ही निर्भर होती थी," आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है इस आधार पर विचलित मनुष्य ने प्रकृति प्रदत्त बीज से कृषि का विधान किया । कृषि के कारण उसे सहयोगी की आवश्यकता हुई, उसने परिवार बसाया पत्नी ने उसका समर्पित भाव से साथ दिया, वर्षा ऋतु में उसकी खेती विकसित हुई, ऋतु परिवर्तनों का ज्ञान बढने से पर्याप्त कृषि की उन्नति हुई, कलात्मक तथा गृहोपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया गृह निर्माण कला में कुशलता प्राप्त की । मानव के सुख-दु:ख से मृदु संगीत का जन्म हुआ, भावनाओं के अभिव्यक्तिकरण की लालसा ने काव्य, साहित्य को जन्म दिया ।

भारतीय कृषि :

कवि, साहित्यकार, एक स्वर से यह स्वीकार करते हैं कि भारत एक कृषिप्रधान देश है जिसकी संस्कृति एवं सभ्यता पूर्णरूपेण कृषि पर आधारित है । 'कृषि युग से वंदित मानव का सांस्कृतिक हृदय ।" कृषि प्रधान देश भारत की कृषि प्रधान संस्कृति ने ही यहाँ पर मानवता का प्रसार किया है । संस्कृति से कृषि का संबंध है जिसके परिणामस्वरूप ही भारतीयता का प्रत्येक स्वरूप कृषि से ही प्रारंभ होता है और कृषि में ही समाहित हो जाता है । भारतीयों को आर्य शब्द से अभिहित किया जाता है, जिसका अर्थ है खेती करना । कृषि क्रांति है, कृषि जीवन है ।

साहित्य एवं कृषि :

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है । समाज के आसपास जो भी हलचल होती है उसका चित्रण साहित्य का मंतव्य है । वैदिक साहित्य में कृषि की पर्याप्त प्रतिष्ठा पाई जाती है, कृषि के प्रति श्रद्धा, निष्ठा आदि की स्थापना वैदिक साहित्य से ही हुई है । प्राचीन सभी ग्रंथों में कृषि का विस्तार से वर्णन मिलता है, फसल के समय का निर्देश दिया गया है, वैदिक युग में वर्तमान युग की भांति सस्य चक्र प्रथा अर्थात एक फसल को एक खेत में दो वर्ष में केवल एक बार ही बोया जाता था और दूसरी वर्ष दूसरी फसल बोई जाती थी । यह भूमि माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ ।' लेखकों में जब तक यह ज्ञान न होगा तब तक उनके साहित्य की जड़े मजबूत नहीं होगी, आकाश बेल की तरह हवा में तैरती रहेंगी । हिंदी कवियों का स्वर इस प्रतिष्ठित संस्कृति के साथ सदैव मुखर रहा है । कहीं पर वह भूमि की अतुलित समृद्धि का कहीं उसकी मातृ वत्सलता का और कहीं उसको आदर्श का प्रतिरूप मानता रहा है ।

समकालीन हिंदी कविता एवं कृषि :

भारतवर्ष के नवजागरण काल में जब सामाजिक सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना का उदय हो रहा था । उस समय हिंदी कवियों में एक नवीन दायित्व का बोध हुआ और वह था कृषक समाज तथा उसकी संस्कृति के महत्व का आभास । यही कारण था कि आधुनिक हिंदी कविता ने अपने शैखवकाल से ही कृषक समाज की हिमायत करती आ रही है ।

१) भूमि के प्रति आस्था :

भूमि अक्षय निधि का कोष है । उसके गर्भ में अपार संपदा छिपी पडी है, पार्थिव कल्याण से संपन्न भूमि का स्वरूप मनोहर है कवि इसकी हरी भरी शोभा से नयन जुडाता है –

'धरती इससे जो हरी हरी होती है,
उस शोभा से हम भी निज नयन जुडावे ।"

इस माटी की पूजा करने को सहज ही हृदय विकल हो उठता है और कवि के शब्द फूट पडते हैं –

'आओ पूजें इस माटी को
माता जी वत्सल छाती को
सारी निधियां धरी यहाँ पर
किस हुए जग में उजियारा ।"

कवि पंत धरती की चिर उदारता से मुग्ध हैं –

'प्रणता सदा सदा से धरणी, इसका चिर उदार वक्षस्थल ।"

२) मिट्टी का व्यापार :

कवि के आसपास इस अनमोल मिट्टी का भयंकर व्यापार हो रहा है, चुटकी बह्र मिट्टी की कीमत करोडों रुपए हैं –

'आसपास ही देख रहा हूँ मिट्टी का व्यापार
चुटकी भर मिट्टी की कीमत जहाँ करोड हजार ।"

मिट्टी के प्रति सबकी भावना एक जैसी नहीं है जहाँ कुछ भारतीय मिट्टी के सम्मान की रक्षा के लिए प्राण त्याग देते हैं और उन्हें बलिदानी की संज्ञा दी जाती है,
वहीं कुछ जयचंदी प्रवृत्ति के लोग मिट्टी का मोलभाव करते हैं ।

'जिसे माटी की महक न भायें
उसे नहीं जीने का हक है ।"

३) कृषक के प्रति कवि की धारणा:

कवि कृषकों को सबसे बड़ा सर्जक मानता है वह कृषक को कवि मानता है, चित्रकार मानता है जो पृथ्वी के अंक पर फसल की कविता तथा चित्र निर्मित करते हैं –

'कृषकों को हल कवि
को मिली लेखनी पैनी "

यह तथ्य सर्वविदित है कि चिर सृजनात्मक कृषक ने ही मानव समाज और मानवीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला तैयार की । वे ही उसके आदि स्त्रोत और सामाजिक स्वावलंबन के सुदृढ स्तंभ है । किसानों ने मानव समाज, मानव सभ्यता, और मानव संस्कृति का शिलान्यास ही नहीं किया बल्कि उसका सुंदर सुविशाल भवन भी तैयार किया । आधुनिक काव्य कृषकों की प्रशंसा और उनकी महानता के गायन से भरा पडा है, आधुनिक युग का शायद ही ऐसा कोई कवि हो जिसने कृषि, कृषक, ग्राम एवं ग्रामीण का, उनकी संस्कृति का और भारत ही भारतीयता का सच्चा प्रतिबिंब उन्हेंने बताया हो ।

४) राष्ट्रीयता :

राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक एकता कृषि संस्कृति के संरक्षण से ही संभव है । भारतवर्ष के नवजागरण काल में जब सामाजिक सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना का था उस समय हिंदी कवियों में एक नवीन दायित्व का बोध हुआ और वह था कृषक समाज । यही कारण है कि आधुनिक हिंदी कविता अपने शैशवकाल से ही कृषक समाज की हिमायत करती आ रही है । ग्रामीण जीवन में अनेक धर्म एवं जातियों के लोग सदियों से साथ रहते रहे हैं जिससे उनमें सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की असीम शक्ति देखने को मिलती है । प्राय: हिंदू, मुसलमान सिक्ख तथा ईसाई एक साथ रहते हैं और सबके दु:ख सुख में बराबर साथ देते हैं । ऐसे ही धार्मिक समन्वय की भावना की आज पूरे राष्ट्र में महती आवश्यकता है तभी राष्ट्री की अखंडता सुरक्षित रह सकती है । ग्रामों में सभी मनुष्य पहले किसान है फिर कोई अन्य जाति या धर्म के माननेवाले ।

'मिटा जाति बंधन सभी एक से हैं
छूआछूत का भेद हम क्यों मनायें ।"

५) कृषि संस्कृति :

आधुनिक साहित्य में कृषि संस्कृति का अक्षय भंडार सुरक्षित है। कवियों ने कृषि संस्कृति के विविध पक्षों को अपनी कविता में व्यक्त किया है। ग्राम की संध्या कितनी मनमोहक होती है संध्या को परी के रूप में देखता हुआ कवि किसी गांव के दृश्य को अपने साहित्य में अंकित करता है। कविवर पंत तो गाँव की संस्कृति के सबसे बडे हिमायती है, उनकी ग्राम्या के अनेक चित्र इस तथ्य के प्रमाण है कि कवि पंत को कृषक तथा उसकी संस्कृति के प्रति कितनी सहानुभूति है, उनके महत्व का आभास है। वाणी कविता संग्रह में कवि आह्वान करता है कि 'ग्राम्या' का संस्कार करो –

'मुझको भाया यह प्रदेश, बोला अंर्तमन'
ग्राम्या का संस्कार करो जड़ हो नव चेतन
मूल प्रकृति संस्कृति में दृढ संबंध सनातन
प्रकृति खेत कृषि संस्कृति बीज अतल में गोपना।'

कृषि संस्कृति का जीवंत स्वरूप ग्रामों में विकसित होता रहा है।

ग्राम संस्कृति में स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखने की रीति है। माता जी समवयस्का को माता तथा भगिनी की समवयस्का को बहिन और अपनी वय से छोटी अवस्था की स्त्रीयों को बहू-बेटी के समान समझा जाता है। लोकलाज का डर सभी को रहता है। आज युग की माँग है आस्था, विश्वास, परिश्रम, त्याग, समर्पण की जो यदि कहीं है तो कृषक के हृदय में कृषक के घर में हैं।

६) बीज शक्ति का पुंज :

कृषि के प्रमुख तत्वों मे बीज भी महत्वपूर्ण है। बीज शक्ति का पुंज है, उस छोटे से बीज के अंतर में बृहत निर्माण का स्त्रोत संजोया हुआ है। बीज में संपूर्ण जगत के विकास का सूत्र निहित है। बीज का ज्ञान मानव सभ्यता के विकास की वह सीढी है जिसके बिना सभ्यता का इतिहास अधूरा है, प्रसाद की कामायनी ने बीजों का संग्रह कर मनु के आखेट प्रिय जीवन में संघर्ष उत्पन्न कर उन्हें निरीह शावकों की हत्या करने से विमुख करने का प्रयास किया –

'जब देखो बैठी हुई वही शालियां बीनकर नहीं श्रोत
या अन्न इकट्ठे करती है होती न तनिक सी कभी कलांत
बीजों का संग्रह और उधर चलती है तकली भरी गीत
सब कुछ लेकर बैठी है वह मेरा अस्तित्व हुआ अतीत"

७) हल:

वर्षा के बाद जब खेत में थोडी नमी आ जाती है, मिट्टी की शुष्कता समाप्त हो जाती है तब कृषक अपने हल बैलों को साथ लेकर खेत में आ जाता है, कंधे पर भारी हल और शरीर पर मात्र एक लंगोटी वस्त्र के नाम पर पहनकर वह खेती करता है। कृषक किसी तपस्वी की भांति हल चलाकर भारत की प्राणसमस्या का हल करता है। ये कृषक भूमि के भक्त हैं। बैल इनकी संपत्ति तथा हल दिव्य अस्त्र है। कवि का कथन है कि सोने के हल से आज की समस्या नहीं हल होगी वह तो लोहे के हल से ही संभव है –

'सोने का हल दूर हटें गिर, हल लोहे के चले वहां फिर
सुलझ सकेगी बस हल से ही आज समस्या सीधी साधी।"

कृषक का हल जब धरती पर चलता है, तो असर खेत की उर्वरा हो जाते हैं, कूडे का भाग्योदय हो जाता है और वहाँ अन्न की महान राशियाँ दिखायी पडने लगती हैं।

३ निष्कर्ष :

इस प्रकार अन्न किसान की बहुत बडी तपस्या और परिश्रम का फल है। कवियों ने कृषि के विविध पक्षों को अपनी कविता में व्यक्त किया है। आधुनिक कवि एक क्षण के लिए भी अपने खेत खलिहानों को नहीं भूलते। भारतीय संस्कृति से अनुराग रखनेवाले कवियों ने कृषि प्रधान जन जीवन को जीवंत अभिव्यक्ति प्रदान की है। कृषि जीवन को भारतीय संस्कृति के संरक्षक और पोषक तथा भारतीय जीवन के महत्वपूर्ण अंग के रूप में प्राय: सभी आधुनिक कवियों ने मान्यता दी है। नवनिर्माण के इस युग में कवि एक अहिंसक समाज की कल्पना करता है जिसमें कृषक वर्ग सुख, संतोष और सद्भाव से रहने की कामना करता है।

सहायक ग्रंथ सूची :

१) धूमिल – संसद से सडक तक
२) डॉ. राहुल – समकालीन कविता
३) नंदकिशोर नवल – समकालीन काव्य यात्रा

४) जयदेव विद्यालंकार – भारतीय कृषि का क, ख
५) पंत – सांस्कृतिक हृदय ग्राम्य
६) मैथिलीशरण गुप्त – किसान
७) उल्फत सिंह चौहान – पूर्वकाल में किसानों की दशा
८) कैलाश गौतम – ग्रामीण
९) बच्चन – त्रिसंगिमा
१०) अज्ञेय कवि, किसान, नरेंद्र शर्मा, पुष्करिणी
११) बाबूलाल शर्मा – नयी योजनाएँ, नव निर्माण के स्वर
१२) पंत – विकास क्षेत्र वाणी
१३) जयशंकर प्रसाद – कामायनी
१४) डॉ. बाबू जोसेफ – समकालीन हिंदी कविता और कुमार अंबुज